SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

औरैया जनपद का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिचय : एक अध्ययन

रश्मि रानी तिवारी, शोधार्थी, हिन्दी साहित्य,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, जिला ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :
रश्मि रानी तिवारी, शोधार्थी, हिन्दी साहित्य,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर,
जिला ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 02/12/2019
Revised on : -----
Accepted on : 06/12/2019
Plagiarism : 01% on 02/12/2019

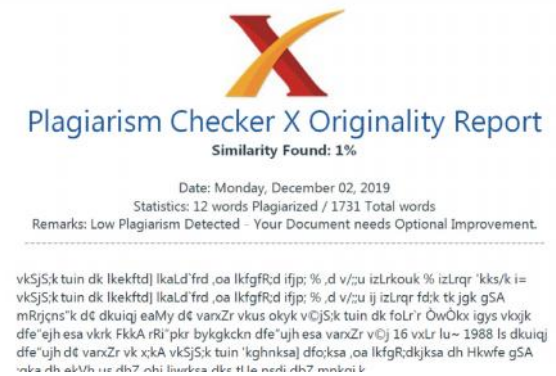
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Monday, December 02, 2019
Statistics: 12 words Plagiarized / 1731 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

vkSjS;k tuin dk lkekftd] lkaLd`frd ,oa lkfgfR;d ifjp; % ,d v/;;u izLrkouk % izLrqr 'kks/k i=
vkSjS;k tuin dk lkekftd] lkaLd`frd ,oa lkfgfR;d ifjp; % ,d v/;;u ij izLrqr fd;k tk jgk gSA
mRrjcns"k d¢ dkuiqj eaMy d¢ varxZr vkus okyk v©jS;k tuin dk foLr`r ÒwÒkx igys vkxjk
dfe"ejh esa vkrk FkkA rRi"pkr bykgkckn dfe"ujh esa varxZr v©j 16 vxLr lu~ 1988 ls dkuiqj
dfe"ujh d¢ varxZr vk x;kA vkSjS;k tuin 'kghnksa] dfo;ksa ,oa lkfgR;dkjksa dh Hkwfe gSA

प्रस्तावना :–

प्रस्तुत शोध पत्र औरैया जनपद का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिचय : एक अध्ययन पर प्रस्तुत किया जा रहा है। उत्तरप्रदेश के कानपुर मंडल के अंतर्गत आने वाला औरैया जनपद का विस्तृत भूभाग पहले आगरा कमिश्मरी में आता था। तत्पश्चात इलाहाबाद कमिश्नरी में अंतर्गत और 16 अगस्त सन् 1988 से कानपुर कमिश्नरी के अंतर्गत आ गया। औरैया जनपद शहीदों, कवियों एवं साहित्यकारों की भूमि है। यहां की माटी ने कई वीर सपूतों को जन्म देकर कई उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। यहां की काव्य धारा पूरे देश में जब बहती है तो रसिकों को रसपान कराते हुए उनके हृदय में एक स्थान बना लेती है। साहित्यकारों की यहां लम्बी सूची है। शोधार्थी ने इस क्षेत्र में शोध करते हुए यहां की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक पृष्ठभूमि का अध्ययन किया है तथा उसे परिचय के रूप में प्रस्तुत किया है।

मुख्य शब्द :–

सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिचय।

सामाजिक परिचय :–

औरैया जनपद को लोक जीवन व लोक संस्कृति अनैकिता में एकता का पर्याय है तथा विविध संस्कृति व लोक जीवन यहां देखने को मिलता है। जनपद के लोक जीवन पर बृज, कन्नौजी, बुन्देली शैली का प्रायः प्रभाव दिखलाता है। जनपद बिधूना तहसील क्षेत्र में जहां कन्नौजी भाषा का प्रभाव है वहीं औरैया तहसील क्षेत्र मे बुन्देली भाषा का प्रभाव नजर आता है। औरैया के पश्चिम भाग में अजीतमल विकास खण्ड में बृज संस्कृति का दर्शन

मिलता है। फफूंद क्षेत्र का लोक जीवन प्रायः मुस्लिम बाहुल्य होने के कारण मुगलिया संस्कृति प्रभावित भी नजर आती है। जनपद के लोक जीवन पर लोक कथाओं, गीतों व संस्कारों का व्यापक प्रभाव है। जनपद में कन्नौजी, बृज व बुन्देलखण्डी जीवन शैली का प्रेरक सांस्कृतिक संगम है। जिसे लोकजीवन आज भी जीवन बनाए हुए है। जनपद के लोकगीत प्राचीनतम गौरव परम्परा, रीति–रिवाज, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनैतिक चेतना जीवन के प्रतीक हैं। महाभारत काल की अनैक घटनाओं का साक्षी सहित धैम्य, उपमन्यु, दुर्वासा जैसे महानतम ऋषियों की तप, साधना की पुण्य भूमि ब्राह्मण व अरण्यक ग्रन्थों से लेकर आज तक लोक जीवन की उत्कर्ष सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना को जीवन्त किये हुए है। जनपद के लोक जीवन पर सनातन, बौद्ध व इस्लाम धर्म का प्रभाव है। जनपद को मोहम्मद गौरी की गजनवी जैसे आक्रान्ताओं के आक्रमण, आला ग्रन्थ के एतिहासिक पात्रों की कर्मभूमि व महाभारत कालीन अवशेष जनपद में लुप्त प्राय होने पर भी आज भी देखने को मिलते हैं। राजपूतों व मराठों के शौर्य पराक्रम व प्राप्त विश्वास घात् के शब्द चित्र जनपद के लोक साहित्य व खंडहर बने खेरों में भी सुरक्षित है। जनपद में मुगल व ब्रिटिश शासकों द्वारा किये गये अत्याचार, लूट, खसोट व आक्रमण की कहानी ऐतिहासिक भग्नावशेष काफी मुखरता से कहते हैं। जनपद के साहित्य, संगीत व लोक नृत्य पर बृज, कन्नौजी व बुन्देलखण्डी का प्रभाव है। लोक गीतों को पश्चिमी उत्तरप्रदेश की संस्कृति ने काफी प्रभावित किया है। जनपद में आल्हा, फाग, कजरी, रसिया, ढोला, अचरी, लंगुरिया, भजन, कीर्तन आज भी ग्राम की चौपाल में देखने को मिलते हैं।

औरैया में मारवाड़ी व्यापारी राजस्थान से आये और बसते चले गये अपने व्यापार को बढ़ाने व वस्तुओ की पूर्ति करने के लिए बड़े–बड़े गोदाम बनवाये। यहां पर मारवाड़ियों ने विभिन्न वस्तुओं की खरीदारी हेतु मण्डियों की स्थापना जैसे रूई मण्डी, गुड़ मण्डी, घी की मण्डी व गल्ला मण्डी इत्यादि। व्यापारियों ने यहां रूकने के लिए सराय भी बनवाये। साथ ही मन्दिरों का भी निर्माण करवाया। औरैया **घी** की मण्डी के लिए भी विशेष प्रसिद्ध रहा। यहां का **घी** देश विदेश में भी जाता था। प्रमुख व्यापारिक केन्द्र होने के कारण यहां लोग बसना शुरू हो गये और आस–पास के जिलों व सुदूर जिलों तक व्यापार होने लगा। तत्कालीन जीवन में आवश्यक वस्तुयें औरैया से ही पूर्ति की जाती थी। औरैया में नील का उत्पादन व व्यापार भी होता था। कलकत्ता से आये एक पार्शी व्यापारी ने एक पेंच के मैदान में 52 चरखी व 3 चरखी को कपास से सूत बनाने का कारखाना भी स्थापित किया था। इस कारखाने से सूत कताई होती थी। कारखाना बाद में बन्द हो गया। इसके बाद कारखानें के शेयर धारकों व अन्य लोगों ने एक कोआपरेटिव सोसायटी बनाकर इंजन से औरैया मे विद्युत उत्पादन एवं वितरण शुरू कर दिया था जो कतिपय कारणों से स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व बन्द हो गया। इसकी ऊंची चिमनियां आज भी औरैया में हैं।[1]

औरेया कवि, साहित्यकारों की धरती है। यहां के साहित्यकार पूरे भारतवर्ष में अपने साहित्य सृजन के लिए जाने जाते हैं। औरेया की माटी ने अनेक ख्यातिप्राप्त साहित्यकार एवं कवियों को जन्म दिया है। यहां के साहित्यकारों में कवि, लेखक, ग़ज़लकार, कहानीकार, व्यंगग्यकार आदि प्रबुद्ध वर्ग के लोग हैं। यहां लोकगीतों के माध्यम से नगरवासियों के मन, मस्तिष्क में कैसे सरल कोमल भाव भरे हैं, का ज्ञान हो जाता है। रहन–सहन विभिन्न रीति–रिवाज, तीज–त्यौहारों आदि का परिचय लोकगीतों के द्वारा ही प्राप्त होता है। प्राचीन इतिहास, घटनाओं मार्मिक प्रवृत्तियाँ एवं तत्कालीन मनोभावों का परिचय प्राप्त होता है। साधारण जन समाज को ही लोक कहा जाता है और उनके द्वारा गाये गीत ही लोकगीत। औरैया के सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन में अतीत एवं वर्तमान का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है। यहाँ की साहित्य एवं संस्कृति अपनी प्रारम्भिक अवस्था से ही बनती सँवरती निखरती चली आ रही है। यहाँ के लोकगीतों में काव्यत्व के अतिरिक्त सबसे बड़ा गुण यह है कि यहाँ की महिलाओं के कलकण्ठ से जब ये लोकगीत मुखरित होते हैं तो इनके सौन्दर्य, माधुर्य एवं उन्माद में द्विगुणीत होने की अपेक्षा अनेक गुनी वृद्धि हो जाती है।

सांस्कृतिक परिचय :–

औरैया जनपद का सांस्कृतिक परिचय प्राप्त करने से पूर्व हमें संस्कृति शब्द का आशय स्पष्ट कर लेना चाहिए। किसी देश या राष्ट्र का प्राण उसकी संस्कृति ही है। संस्कृति शून्य राष्ट्र की विश्व में अस्तित्व शून्य है। 'सम् उपसर्ग पर्वक 'कृ' धातु से भूषण अर्थ में 'सुट्' आगमपूर्वक **क्तिन** प्रत्यय होने से संस्कृति शब्द सिद्द होता है। अस्तु लौकिक, परलौकिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक अभ्युदय के उपयुक्त देहेन्द्रियमन, बुद्धि तथा अहंकारादि की भूषणयुक्त सम्यक चेष्टायें एवं हलचलें ही संस्कृति है।'[2] 'संस्कृति शब्द इतना व्यापक रहा है कि संस्कृति शब्द की व्याख्या विभिन्न लोगों के द्वारा कई प्रकार से की गई, फिर भी इसे दुज्ञैय बताया गया। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में 'मनुष्य की श्रेष्ठ साधनायें ही संस्कृति है।' संस्कृति मानव का समग्र संस्कार करती है। मनुष्यों की सभी वृत्तियों का परिष्कार एवं परिमार्जन संस्कृति के माध्यम से ही होता है। हिन्दू संस्कृति सर्व कल्याणकारिणी है।'[3]

संस्कृति का लक्ष्य आत्मा का उत्थान से है। सम्यक संस्कार को ही संस्कृति कहा जाता है। संस्कारों से आत्मा की अन्तःकरण की शुद्धि होती है। यद्यपि सामान्य रूप से भिन्न–भिन्न सम्प्रदायों के धर्मग्रंथों के आधार पर विभिन्न संस्कृतियाँ निर्णीत होती हैं, तथापि अनादि काल से अपौरुषेय ग्रन्थ वेद ही है। सभ्यता, संस्कार एवं संस्कृति का अन्योन्याश्रित संबंध है। औरैया जनपद की संस्कृति का मूलाधार धर्म है। सद्विचार, सद्व्यवहार सद्कार्य जो कुछ भी सात्विक रूप से विचारणीय, करणीय, धारणीय है वही धर्म है। पंचमो वेद 'महाभारत' में वेदव्यास जी ने धर्म की व्याख्या निम्न रूप में की है।

धारणाद् धर्म इत्याहुः धमों धारयते प्रजाः
यद् स्याद् धारणसंयुक्तं सधर्म इति इत्युदाहतुः।

आर्थात्, धर्म मानव लोक परित्रायक, समुन्नति साधक, अवनति निरोधक, ज्ञान विज्ञान शौर्यादिगुण सम्पादक तथा आस्तिभ्यादि प्रवर्तक है।

औरैया जनपद की वसुन्धरा संस्कृति सदाचार एवं सुसंस्कारों से ही अनुप्रणित रही है। यहाँ के त्यौहारों और पर्वों के उल्लास में जो संस्कृति मुखरित रही है, वह होली के विमुक्त गायन में झंकृत है।

साहित्यिक परिचय :–

साहित्य और जीवन का पारस्परिक सम्बन्ध अक्षुण्ण है।[4] साहित्य शब्द के स्थान पर काव्य शब्द का ही प्रयोग प्राचीनकाल में पाया जाता है। संस्कृत काव्य शास्त्रानुसार साहित्य और काव्य पर्यायवाची है। साहित्य और काव्य के विभिन्नत्व और अभिन्नत्व को स्पष्ट करने के लिये बाबू श्याम सुन्दर दास का यह कथन पर्याप्त है कि 'संग्रह रूपमें जो साहित्य है मूल रूप में वही काव्य है।'[5]

साहित्य शब्द का प्रयोग सीमित तथा व्यापक दो अर्थों में किया जाता है। सीमित साहित्य का तात्पर्य है– कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास आदि से व्यापक अर्थ में साहित्यान्तर्गत सभी विषयों के ग्रंथ गणनीय है। यथा दार्शनिक साहित्य, बीमा साहित्य, गणित साहित्य आदि प्रस्तुत शोध ग्रन्थ में अभीसिप्त है।

'आज के लगभग हजार वर्ष पहले हिन्दी साहित्य लिखना शुरू हुआ था'[6] हिन्दी साहित्य का इतिहास भारतीय जीवन की उन समस्त जीवन की प्रवृत्तियों का प्रतिबिम्ब है जो हिन्दी भाषा के विकास के साथ ही विविध युगों में प्रतिबिम्बत हुआ है। इनमें न केवल उन महान साहित्यकारों का इतिहास है, जिन्होंने स्थाई रचनाओं की सृष्टि की है। उन सभी प्रवृत्तियों और परम्पराओं का क्रमिक विकास है जो राजनीति, धर्म, दर्शन और समाज की मान्यताओं के फलस्वरूप है।[7]

औरैया जनपद यद्यपि विपुल साहित्य सम्पदा से वंचित है। तथापि विभिन्न ग्रंथों में जनपदीय साहित्य का उल्लेख इस बात की पुष्टि करता है कि औरैया जनपद का साहित्यिक परिवेश साहित्यश्री मधुर्जित है। औरैया जनपद का क्योंटरा ग्राम प्राचीन एवं मध्य युग में संस्कृत भाषा के अनेकानेक विद्वानों

के कारण औरैया की काशीपुरी माना जाता रहा। यह अनेक विद्वान लेखक कवियों के जन्मस्थल रहा। संस्कृत के उद्भट विद्वान एवं श्रीमद् भागवताचार्य प्रेमानन्द सरस्वती जी महाराज, संस्कृत–हिन्दी दोनों भाषाओं के अनेक महाकाव्य, खण्ड काव्य की रचना करने वाले आषु कवि पं. बद्री दयाल 'सुधाकर' संस्कृत हिन्दी दोनों भाषाओं में रचना करने वाले पं. मधुसूदन दत्त बाजवेयी, महाकाव्य खण्ड काव्य एवं अनेक कृतियों के जनक पं. श्याम बाबू मिश्र 'भ्रमणेश' कथाकार गीतकार पं. रमानाथ त्रिपाठी क्योंटरा के पावन माटी की ही देन है। संस्कृत साहित्य सम्मेलन पटना अधिवेशन के अध्यक्ष पं. लोकनाथ मिश्रा ने 'सुधाकर' जी शुक्ल को अपने प्रथम पुरस्कार प्रदान करते हुए कहा था कि श्री सुधाकर जी के समान महान कवि संस्कृत साहित्य में विल्हुज के बात कोई हुआ ही नहीं। इन्होंने कहा था कि इस कवि को इस शताब्दी का सर्वश्रेष्ठ कवि घोषित करता हूँ।[8] 'रीतिकालीन महाकवि आचार्य देव ने फफूंद के राजा भागमल के यहां अपने प्रवास काल में साहित्य सर्जना की। राजा भागमल के गोलोकवासी हो जाने पर रूरू के राजा रई से आजम कुशल सिंह के यहाँ रहकर 'कुशल विलास' की रचना की' ।[9] इसमें देव ने अपने आश्रयदाता की अधिक प्रशंसा की है, सम्भव है कुशल सिंह ने प्रचुर दान–दक्षिणा से सम्मानित किया है।[10]

निष्कर्ष :–

औरैया जनपद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि शहीदों की रही है। ऐतिहासिक क्षेत्र होने के कारण यहां की माटी ने उन साहित्यकार, कवियों को जन्म दिया जो पूरे विश्व में अपना परचम फहरा रहे हैं। पूरे भारतवर्ष में औरैया जनपद की मिसाल यहां की साहित्य सर्जना के लिए दी जाती है क्योंकि यहां की माटी ने वीर सपूतों से लेकर एक संवेगात्मक एवं बौद्धिक रूप से समृद्ध धरा पर अनेक साहित्यकारों को उनका मुकाम दिलाया है। यहां के कवि एवं साहित्यकार अनेक पुरस्कारों, सम्मानों से नवाजे जा चुके हैं।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. *Shree Janta Inter College Ajeetmal (Auraiya) UP.*
2. *संस्कार संस्कृति धर्म, ब्रह्मलीन धर्म सम्राट स्वामी श्री करयाती जी महाराज कल्याण संस्कार अंक वर्ष 80 अंक गीता प्रेस गोरखपुर।*
3. *[1]कल्याण हिन्दू संस्कृति अंक वर्ष 24 अंक 1, हिन्दू संस्कृति जगदगुरू शंकराचार्य, ज्योतिर्मय बदरिकाशय।*
4. *डॉ. राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, अभिनव साहित्यिक निबंध।*
5. *(1961), साहित्य के मान और मूल्य, प्रकाशक राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर राजस्थान।*
6. *हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य, ग्रन्थावली भाग–3।*
7. *डॉ. रामकुमार शर्मा, हिन्दी साहत्यि का विकास–भूमिका।*
8. *मंजुल मृणालिका, सं. ओम नारायण चतुर्वेदी, (1998), (औरैया जनपद विषेशांक), मंजुल प्रकाशन औरैया हिन्दी प्रोत्साहन निधि औरैया, वर्ष जनवरी–मार्च।*
9. *हरदयालु सिंह, (1953), देव–दर्शन, प्रकाशन इंडियन प्रेस लि. प्रयाग।*

****